Episode - 46

एपिसोड शीर्षक :

<u>तकनीक से बदलेगी शिक्षा की तस्वीर</u>

स्क्रिप्ट : HemantLagvankar

अनुवाद : ShriniwasOli

संकल्पना और समन्वय: डॉ। बी.के. त्यागी

शिक्षा ही हर तरह के ज्ञान और प्रगति का आधार है। ऐसे में शिक्षा जगत में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की काफी अहमियत है। हाल के वर्षों में हुए एक अध्ययन के मुताबिक शिक्षा और सीखने के क्षेत्र में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का प्रयोग लगातार तेजी से बढ़ेगा। इससे ना सिर्फ पढ़ाई में मदद मिलेगी बल्कि यह छात्रों को बेहतर करियर चुनने में भी फायदेमंद होगा। इस एपिसोड में यही बताया गया है कि शिक्षा व्यवस्थाओं और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के मेलजोल से किस तरह हमारी समझ, मूल्यांकन के तरीकों और प्रशासन में सुधार हुआ है। साथ ही यह भी बताने की कोशिश है कि भारतीय शिक्षा प्रणाली में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का प्रभावी उपयोग किस तरह से किया जा सकता है।

पात्र परिचय

रोहन : कॉलेज का छात्र (उम्र 18 वर्ष)

राधिका शर्मा : रोहन की माताजी (उम्र 45 वर्ष)

रंजन शर्मा : रोहन के पिताजी (उम्र 50 वर्ष)

प्राचार्य : कॉलेज के प्राचार्य (उम्र 50 वर्ष)

श्रीमती दास : कॉलेज में आईटी की प्रोफेसर (उम्र 50 वर्ष)

(रविवार की सुबह। रोहन मोबाइल पर कोई गेम खेल रहा है। मोबाइल से कुछ आवाजें आ रही हैं। रंजन अखबार पढ़ रहे हैं)

राधिका : ये क्या है रोहन ? तुम सबह से ही मोबाइल में लग गये..। फाइनल एक्ज़ाम के लिए मुश्किल से एक महीना ही बचा है और तुम मोबाइल से चिपके पड़े हो। कम से कम नहाधोकर नाश्ता तो कर लो।

रोहन : हम्म्म...।

राधिका : **(रंजन से)** आप भी उससे कुछ नहीं कह रहे हैं !

रंजन : राधिका... मैं उससे क्या कहूं ? अब वह बड़ा हो गया है और अपना भला-बुरा खूब समझता है।

रोहन : बिल्कुल सही बात पापाजी।

राधिका : हूं...। (व्यंग्यात्मक अंदाज में) वाह...अब हमारा बेटा बड़ा हो गया है। अभी तो तुम दोनों मेरी बात पर ध्यान नहीं दे रहे हो लेकिन तुम्हें ये सब रीजल्ट के वक्त याद आएगा।

रोहन : ओह मम्मी...। आप मेरे रीजल्ट की चिंता मत करो। मैं पढ़ाई ही तो कर रहा हूं।

राधिका: मुझे बेपकूफ मत बनाओ रोहन। पिछले साल तक तो तुम मन लगाकर पढ़ाई करते थे। लेकिन जब से तुम्हारे पापाजी ने तुम्हें स्मार्ट फोन दिया तबसे तो तुम्हारा पढ़ाई से वास्ता ही छूट गया।

रंजन : ओह... अब मैं भी कुछ कहूं क्या ?

राधिका : (झल्लाते हुए) तुम दोनों से तो इस मामले में बात करने का कोई फायदा नहीं है... चलो.. मुझे अपना काम करने दो। मुझे इतनी फुर्सत तो नहीं है कि मैं भी तुम्हारी तरह मोबाइल पर गेम खेलूं या फिर अखबार पढ़ूं। तुम्हारे लिए खाना भी तो बनाना है।

(राधिका रसोई में चली जाती है। रोहन अब भी मोबाइल में ही व्यस्त है)

रंजन : बेटा रोहन..। तुम्हारी मम्मी ठीक ही कह रही हैं। अभी तुम्हें मोबाइल पर खेलने की बजाय पढ़ाई पर ज्यादा ध्यान देना चाहिए।

रोहन : हम्म्म्म।

रंजन : मेरी बात पर ध्यान दो रोहन। मैं तुमसे ही बात कर रहा हूं।

रोहन : हां.. पापाजी। मैं आपकी बात सुन रहा हूं।

रंजन : ये तो बात करने का कोई तरीका नहीं हुआ।

रोहन : पापाजी, मुझे फर्स्ट लेवल तो पूरा कर लेने दीजिए।

रंजन : तुम तो हद कर रहे हो रोहन...। **(गुस्से में)** मेरे सब्र का इम्तिहान मत लो।

रोहन : ओह पापाजी...। बस एक एक **सेकंड। (मोबाइल फोन से गेम जीतने का अहसास कराता संगीत सुनाई देता है)** ओके पापाजी। अब करते हैं बातचीत।

रंजन : रोहन... में तो अब सच में परेशान हो चुका हूं। हमारे घर में हर दिन इसी मसले पर बहस होती है। तुम अपनी जिम्मेदारी क्यों नहीं समझते ?

रोहन : मुझे मालुम है पापाजी...। ये भी मेरी पढ़ाई का एक हिस्सा ही है।

रंजन : क्या कहा ? तुम मुझे बेवकूफ तो नहीं बना रहे ? मुझे मालूम है कि तुम मोबाइल में गेम खेल रहे थे। सच्चाई तो ये है कि तुम्हें मोबाइल फोन की लत लग गई है।

रोहन : मेरी बात तो समझिए पापाजी..।

रंजन : मैं तो सब समझ रहा हूं रोहन.. लेकिन तुम नहीं समझ पा रहे हो। हमने तुम्हें कभी भी मनमर्जी करने से नहीं रोका.. लेकिन अब सवाल तुम्हारे करियर का है। दरअसल गलती मेरी ही थी कि मैंने तुम्हें एक नया स्मार्ट फोन खरीदकर दे दिया। अब में तुम्हें लेकर किसी काउंसलर से मिलूंगा।

रोहन : लेकिन पापाजी..।

रंजन : नहीं.. नहीं.. मुझे अब कुछ नहीं सुनना है। अब इसे ही तय समझो।

(Scene Change /Music Transition)

(रंजन और राधिका रोहन के बारे में बातचीत कर रहे हैं)

रंजन : राधिका, रोहन ने तो हद कर दी है। अब मैं रोहन को किसी काउंसलर के पास लेकर जाऊंगा।

राधिका : ज्यादा परेशान मत होओ रंजन। वो पढ़ाई कर लेगा।

रंजन : तो फिर तुम उसे हर वक्त डांटती क्यों रहती हो ?

राधिका : उसे सही बात बताना तो हमारी जिम्मेदारी ही है। लेकिन इसका मतलब ये नहीं कि हम उसे काउंसलर के पास लेकर जाएं।

रंजन : ठीक है... लेकिन बाद में मुझसे फिर कुछ मत कहना।

राधिका : मुझे लगता है कि तुमने सब्र छोड़ दिया है।

रंजन : तो फिर हमें क्या करना चाहिए ?

राधिका : मेरे ख्याल से हमें रोहन के कॉलेज में उसके टीचर्स या प्रिंसिपल से बात करनी चाहिए।

रंजन : क्यों ?

राधिका :हमें उनसे रोहन की पढ़ाई के बारे में पता चलेगा। जरा देखें कि वो क्या कहते हैं। उसके बाद फिर जो भी जरूरी लगेगा वो करेंगे।

रंजन :हां... ये तो अच्छा आइडिया है। मैं रोहन के कॉलेज में फोन करके टीचर्स से मिलने का वक्त मांग लेता हूं।

राधिका : हां.. ये ठीक रहेगा।

(Scene Change /Music Transition)

(रंजन और राधिका कॉलेज प्रिंसिपल के केबिन के बाहर इंतजार कर रहे हैं)

रंजन : मुझे लगता है कि प्रिंसिपल साहब मिलने का वक्त तो दे ही देंगे।

राधिका : हां.. हां.. क्यों नहीं। फोन पर तो उन्होंने इजाजत दी ही थी और हम लोग सही वक्त पर यहां पहुंच भी गए हैं।

रंजन : ठीक है। तो फिर अंदर चलें ?

राधिका :हां .. जरूर।

(रंजन दरवाजा खटखटाते हैं)

रंजन: अंदर आ सकता हूं सर ?

प्रिंसिपल : (प्रश्नवाचक स्वर) आप रंजन जी और राधिका जी ?

रंजन : जी सर.. । नमस्कार।

प्रिंसिपल : आइये–आइये... प्लीज़।

(रंजन और राधिका कुर्सी खींचते हैं। कुर्सियां खींचने की आवाज़)

रंजन : शुक्रिया सर।

राधिका : सर, आपने हमें मिलने का वक्त दिया.. हमारे लिए ये बड़ी बात है।

प्रिंसिपल : (हंसते हुए) अरे.. ऐसी कोई बात नहीं राधिका जी। हम तो खुद ही चाहते हैं कि अपने स्टूडेंट्स के माता-पिता से हमारी बातचीत होती रहे। बच्चों की बेहतरी में इससे मदद ही मिलती है। खैर... आप लोग बताइये... कैसे आना हुआ ?

रंजन : सर.. दरअसल मामला ये है कि... वो **(अटकते हुए)**

प्रिंसिपल: संकोच ना करिये रंजन जी..। खुलकर अपनी बात कहिए। मैं हर मुद्दे पर बातचीत के लिए तैयार हूं।

रंजन : शुक्रिया सर। दरअसल.. कहीं आप ऐसा ना कहें कि ऐसी बातों से स्कूल का क्या लेना-देना... लेकिन हमने सोचा कि...

प्रिंसिपल : ... बताइये रंजन जी... क्या सोचा आपने...।

रंजन : सर... हमारा बेटा रोहन एक अच्छा बच्चा है। वो इमानदार भी है और आज्ञाकारी भी।

प्रिंसिपल : हां... ये बात तो मुझे मालूम है।

रंजन : जी, सर लेकिन मसला ये है कि आजकल वो फोन पर कुछ ज्यादा ही वक्त गुजार रहा है।

प्रिंसिपल : (हंसते हुए) रंजन जी...। आजकर हर माता-पिता की यही शिकायत रहती है।

राधिका : सर। चिंता की बात तो ये है ही। कुछ कहो तो वो कहता है कि पढ़ाई ही कर रहा हूं। दरअसल अब उसने झूठ बोलना शुरू कर दिया है। यही सब चलता रहा तो बात हमारे हाथ से निकल जाएगी।

प्रिंसिपल: ओके...। जरा रुको। मैं देखता हूं कि अभी वो अपने फोन पर क्या कर रहा है।

राधिका : (चौंकते हुए) लेकिन सर..। आप यहां से ही कैसे जान लेंगे ?

प्रिंसिपल : रुको... जरा एक मिनट रुको। मैं अभी बताता हूं।

रंजन :इसका मतलब..

प्रिंसिपल : ये दिखिये रंजन जी...। राधिका जी.. आप भी देखिए.. इधर इस स्क्रिन पर देखिए। यहां रोहन शर्मा के नाम के आगे एक हरी बत्ती जल रही है। इसका मतलब है कि अभी वह फोन पर कुछ कर रहा है।

राधिका : लेकिन सर। अभी तो उसे अपनी कक्षा में होना चाहिए था

प्रिंसिपल : अभी चेक करके बताता हूं। हां.... ये देखो...। अभी वो इस बिल्डिंग में है...यहां पर।

रंजन : इसका मतलब ये हुआ कि आप अपने स्टूडेंट्स पर लगातार निगरानी रखते हैं।

प्रिंसिपल : इसका गलत अर्थ ना निकालिए रंजन जी।

रंजन : नहीं सर...। मैं तो ये कह रहा था कि...

प्रिंसिपल : देखो... मैं आपके भ्रम और शक को दूर कर देता हूं। दरअसल आप लोग पिछली बार की पेरेंट्स मीटिंग में नहीं आए थे... इसलिए...

रंजन :सर... तब हम लोग बाहर घूमने के लिए गये थे और...

प्रिंसिपल : अरे... ऐसी कोई बात नहीं है रंजन जी। मैं बताता हूं।

रंजन : ओके सर...।

प्रिंसिपल : देखिए..। ये तो आप जानते ही हैं कि हमारे कॉलेज का कितना बड़ा नाम है। इसीलिए हम भी हमेशा इसे और बेहतर बनाने की कोशिश में जुटे रहते हैं।

रंजन : जी सर।

प्रिंसिपल : इसलिए हमने भी देश में चल रहे राष्ट्रीय कार्यक्रम 'डिजीटल इंडिया' की गाइडलाइंस के मुताबिक नई पहल की है। सीखने-सिखाने के दौरान हमने नए और स्मार्ट तौर-तरीकों का इस्तेमाल शुरू किया है।

रंजन : ओके...

प्रिंसिपल : हम लोग इन नई तरकीबों का इस्तेमाल ना सिर्फ पढ़ा में कर रहे हैं बल्कि कॉलेज के एडमिनिस्ट्रेशन में भी इनका उपयोग हो रहा है।

राधिका : सर, ये कौन से टूल्स (tools) हैं और उनका मोबाइल फोन से भला क्या वास्ता ?

प्रिंसिपल : मैं बताता हूं राधिका जी। क्या आपने कभी एआई यानी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के बारे में सुना है ?

राधिका : हां सर। बहुत पहले मैंने पढ़ा था कि एक बार शतरंज की एक बाजी में कंप्यूटर और ग्रैंडमास्टर के बीच मुकाबला हुआ था।

प्रिंसिपल : (हंसते हुए) सही कहा आपने। ये बात है सन उन्नी सौ छियानबे (1996) की। तब गैरी कास्पारोव ने एक सुपर कंप्यूटर के खिलाफ छे मैच की सीरीज खेली थी।

उस सुपर कंप्यूटर का नाम डीप ब्लू (Deep Blue) था। लेकिन अगले ही साल सन 1997 में हुए मुकाबले में डीप ब्लू ने कास्पारोव को मात दे दी।

रंजन : हां... ।

प्रिंसिपल : लेकिन ये तो हुई गुजरे जमाने की बात। बीस सालों में तो दुनिया काफी बदल गई है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का इस्तेमाल हमारी रोजमर्रा की जिंदगी में भी हो रहा है।

रंजन : हां..आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ने हमारी जिंदगी को और बेहतर भी बना दिया है।

प्रिंसिपल : सही बात है रंजन जी। तभी तो हम अपने कॉलेज में भी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की ताकत की इस्तेमाल कर रहे हैं। पढ़ाई-लिखाई से जुड़े काम में दुनियाभर में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का इस्तेमाल हो रहा है। चाहे वो पढ़ाने का काम हो या फिर इम्तिहान लेना। ग्रेडिंग में भी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस बखूबी काम आ रही है।

रंजन : वाह.. यकीन नहीं होता... ये तो कमाल की बात है।

प्रिंसिपल : दरअसल आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ने शिक्षकों को एक नए तरीके से काम करने का मौका दिया है। अब टीचर सिर्फ कॉपियों से ही बच्चों की क्षमता नहीं आंकते बल्कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की मदद से हर बच्चे पर बहुत बारीकी से ध्यान देते हैं। हर बच्चे की खूबियों या फिर कमजोरियों को पहचानना भी ज्यादा सरल हो गया। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से पढ़ाई के मामले में एक क्रांति सी हो रही है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की तरकीबों की बदौलत शिक्षा से जुड़ी चुनौतियों से निपटा जा सकता है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के जरिये टीचर्स के कामकाज को काफी आसान और ज्यादा कारगर बनाया जा सकता है

राधिका : लेकिन ऐसा कैसे होगा सर?

प्रिंसिपल : देखिये राधिका जी, आमतौर से टीचर्स को परीक्षा और होमवर्क के साथ-साथ अपने स्टूडेंट्स को जरूरी सलाह-मशवरा देने में अच्छा-खासा वक्त लग जाता है।

लेकिन टेक्नोलॉजी की मदद से परीक्षा के सटीक नतीजे तैयार करना ज्यादा आसान हो सकता है।

रंजन : अच्छा..। इसका मतलब ये हुआ कि तब टीचर्स को बच्चों के लिये और ज्यादा वक्त मिल सकेगा।

प्रिंसिपल : बिल्कुल। पढ़ाई लिखाई में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के इस्तेमाल का एक महत्पूर्ण पहलू ये है कि इससे हर बच्चे को उसकी निजी जरूरत के मुताबिक शिक्षा दी जा सकेगी।

राधिका : निजी जरूरत के मुताबिक.... मतलब...?

प्रिंसिपल : देखिये... मैं समझाता हूं। स्कूलों का पाठ्यक्रम कुछ इस तरह से डिजाइन होता है कि वो औसत शैक्षिक क्षमताओं और कौशल वाले अस्सी (80) फीसदी छात्रों के ही मुताबिक होता है। बाकी दस फीसदी छात्र ऐसे होते हैं जिनके लिए यह पाठ्यक्रम कठिन होता है।... और बाकि बचे दस फीसदी छात्रों को अपनी पूरी काबिलियत दिखाने के लिए इससे भी ऊंचे स्तर की जरूरत होती है... जैसे कि आपका बेटा रोहन।

रंजन : अच्छा !

राधिका :लेकिन अब आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की वजह से हम इस स्थिति में हैं कि हर बच्चे को उसकी जरूरत के हिसाब से मशवरा दे पाएं और वो बेहतर प्रदर्शन कर सके। अब सॉफ्टवेयर से क्लास एसाइनमेंट और फाइनल एक्ज़ाम को कुछ इस तरह तैयार किया जाता है जिससे स्टूडेंट्स को हर संभव मदद मिल सके।

रंजन : ये तो बहुत ही शानदार है सर। वर्ना एक भरी-पूरी क्लास में हर बच्चे की ताकत और कमजोरियों की पहचान कर पाना टीचर के लिए आसान तो है नहीं। और अगर पहचान भी लिया तो हर-एक के हिसाब से पढ़ना-पढ़ाना तो और भी मुश्किल काम है....।

प्रिंसिपल : हां... लेकिन अब आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की मदद से ऐसा कर सकते हैं ... और अपने कॉलेज में कर ही रहे हैं।

राधिका : सर... अब हमें तो गर्व हो रहा है कि रोहन को इस कॉलेज में एडमिशन मिला।

प्रिंसिपल : (हंसते हुए) राधिका जी... हमारा रोल तो बस छात्रों को राह दिखाना ही है। यूं भी शिक्षा की कोई सीमा तो है नहीं। ... और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ने उसके सभी दायरों को तोड़ दिया है। आज के दौर में टेक्नोलॉजी की वजह से हम दुनिया का कोई भी कोर्स कहीं से भी बहुत आसानी से कर सकते हैं। जैसे - जैसे इस क्षेत्र में और नई खोजें होंगी, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस की बदौलत और ज्यादा बेहतर ऑनलाइन कोर्स उपलब्ध हो सकेंगे।

राधिका : ये तो उन बच्चों के लिए एक वरदान ही हुआ जो किसी बीमारी की वजह से स्कूल-कॉलेज नहीं जा पाते हैं..। और उन बच्चों के लिए भी जो अपने स्कूल की पढ़ाई से अलग भी कुछ पढ़ना चाहते हैं।

प्रिंसिपल : हां..। मैं आपको आंध्र प्रदेश की मिसाल देता हूं। वहां की सरकार ने बच्चों के स्कूल छोड़ने की दर कम करने के लिए टैक्नोलॉजी का ही सहारा लिया। उन्होंने इसके लिए माइक्रोसॉफ्ट के साथ मिलकर यह अंदाजा लगाने की कोशिश की कौन से बच्चे स्कूल की पढ़ाई बीच में ही छोड़ देते हैं। इसके लिए उन्होंने कुछ खास बिंदुओं को चुना जैसे कि जेंडर (लिंग), सामाजिक और आर्थिक स्थिति, स्कूल का बुनियादी ढांचा और शिक्षक का कौशल। इन बिंदुओं को ध्यान में रखते हुए छात्रों के डेटा का आकलन किया जाता है। इससे छात्र के पढ़ाई जारी रखने या छोड़ देने जैसे कदम का एक अंदाजा लगाया जाता है।

राधिका : सर, आपने पहले कहा था कि आप ये देख सकते हैं कि रोहन अभी मोबाइल का इस्तेमाल कर रहा है या नहीं... । इसका क्या राज है ?

प्रिंसिपल : दरअसल, हमने अपने स्टूडेंट्स से अपने फोन में एक खास एप (App / Application) डाउनलोड करने को कहा है। पढ़ने-पढ़ाने की इस पूरी प्रक्रिया में हमारी मदद के लिए ये एप डिजाइन की गई है। जैसे ही कोई स्टूडेंट फोन में

लॉगइन करता है तो उसके बारे में हमें पता चल जाता है और हमें उसकी लोकेशन भी मालूम रहती है। हम इस पर नजर रखते हैं वो क्या कर रहा है।

राधिका : ओह...। इसका मतलब हुआ कि रोहन झूठ नहीं बोल रहा था। वह अपनी पढ़ाई के लिए इसी एप का इस्तेमाल कर रहा था। लेकिन सर, मेरा सवाल अब भी बाकी है।

प्रिंसिपल : जी.. जी..। पूछिए।

राधिका : सर, मैंने कई बार देखा है कि रोहन मोबाइल में गेम भी खेलता है।... और ये भी एक हकीकत है कि मोबाइल गेम्स ने कई बच्चों की जिंदगी तबाह कर दी है।

प्रिंसिपल : आपका कहना सही है राधिका जी। हमने भी बहुत सारे मजेदार गेम्स तैयार करवाए हैं लेकिन वो सभी पढ़ाई में मदद के लिए ही हैं। पाठों की मुश्किल बातों को समझने में इन विशेष गेम्स अपनी ही अहमियत है।बच्चों के माता-पिता होने के नाते मुझे आपकी चिंता का अंदाजा है... लेकिन हमारा एप एक स्मार्ट एप है। तय वक्त के बाद भी अगर कोई बच्चा गेम बंद नहीं करता है तो ये एप खुद ही उसे लॉक कर देता है। हमने इस बात का ध्यान रखा है कि बच्चे मोबाइल स्क्रीन के सामने ज्यादा वक्त ना गुजारें और उनकी सेहत पर कोई बुरा प्रभाव ना पड़े।

राधिका : सर आपकी बात सही है लेकिन..

प्रिंसिपल : लेकिन क्या राधिका जी ?

राधिका : लेकिन बच्चे अपने माता-पिता की बात नहीं सुनते और वो स्मार्ट फोन जैसी टैक्नोलॉजी के आदी हो जाते हैं।

प्रिंसिपल : हां, ये बात सही है... लेकिन ये दौर टेक्नोलॉजी का ही है। आज बच्चों को सीरी (Siri) और एलेक्सा (Alexa) जैसी नई-नई डिवाइस और एप्लीकेशन बहुत लुभाती हैं। बच्चों के ये जानकर बहुत हैरत होती है कि आखिर यूट्यूब और नेटफ्लिक्स उनकी पसंद के वीडियोज को छांटकर कैसे उनके सामने ले आते हैं। ऐसे में ये भी हमारी ही जिम्मेदारी है कि हम उनकी उत्सुकता को शांत करें। अब तो सरकार

और एजुकेशनल बोर्ड भी इस पर ज्यादा जोर दे रहे हैं कि शिक्षा को आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ज्यादा से ज्यादा जोड़ा जाए। इस उम्मीद के साथ कि जमाने के कदमताल करते हुए हमारे बच्चे भी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस के बारे में जानें और देश आगे बढ़ता चले।

रंजन : वाह...। ये तो बहुत गजब की बात है सर।

प्रिंसिपल : मेरे ख्याल से आप दोनों को प्रोफेसर दास से भी मिल लेना चाहिए। वो आईटी (IT)की प्रोफेसर हैं। वो आपको ज्यादा बेहतर तरीके से बात सकेंगी कि पढ़ाई-लिखाई में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का प्रयोग किस तरह से हो रहा है।

रंजन : हां.. हां.. जरूर सर।

प्रिंसिपल : ठीक है। मैं उन्हें फोन करता हूं। **(इंटरकॉम के की-पैड पर नंबर डाइल करने की आवाज़)** हेलो प्रोफेसर दास...। प्लीज़ क्या आप अभी मेरे केबिन में आ पाएंगी। ... ओके.. ओके। **(फोन रखने की आवाज)** वो आ रही हैं।

रंजन : हम दोनों उनसे बातचीत जरूर करेंगे। और सर... आपने हमें इतना ज्यादा वक्त दिया और शानदार जानकारियां दीं...। आपका बहुत - बहुत शुक्रिया सर।

(दरवाजा खटखटाने की आवाज़)

प्रो. दास : मैं अंदर आ सकती हूं सर ?

प्रिंसिपल : आइये आइये प्रोफेसर दास। इनसे मिलिये... आप हैं रंजन जी और राधिका जी। रोहन शर्मा के माता-पिता हैं।

प्रो.दास : नमस्ते।

रंजन व राधिका : जी नमस्ते ... नमस्ते।

प्रिंसिपल : मैंने इनके साथ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस पर काफी बातें की हैं। Please अब आप जरा इनको दिखाइये कि हम अपने कॉलेज में इस सबका इस्तेमाल कैसे कर रहे हैं।

प्रो. दास : जरूर सर...।

प्रिंसिपल : तो ठीक है रंजन जी... राधिका जी। शायद मैंने आपका संदेह दूर कर ही दिया होगा।

रंजन :जी सर। काफी अच्छी रही आपसे मुलाकात।

प्रिंसिपल : और आप रोहन की चिंता बिल्कुल मत कीजिए। वो एक बेहतरीन स्टूडेंट है।आपसे फिर कभी होगी मुलाकात।

रंजन : शुक्रिया सर... । आपका बहुत-बहुत शुक्रिया।

प्रो. दास : चलिए... हम लोग मेरे केबिन में चलते हैं।

राधिका : जी... जरूर।

(Scene Change /Music Transition)

(रंजन और राधिका... प्रोफेसर दास के केबिन में बैठे हैं)

प्रो. दास : आप दोनों को प्रिंसिपल साहब ने यह तो बता ही दिया कि आजकल एजुकेशन में एआई (AI) यानी आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस का उपयोग हो रहा है और इसकी कितनी अहमियत है।

राधिका : जी मैडम।

प्रो. दास : अब मैं बताती हूं कि हम लोग अपने कॉलेज में इसका इस्तेमाल कैसे करते हैं। इधर.. इस स्क्रिन में देखिए। अब कक्षाओं में पढ़ाई जाने वाली किताबें एक नई शक्ल ले रही हैं। एआई की मदद से पाठ्यक्रम की ऐसी किताबें को डिजिटली तैयार किया जा रहा है जो कि बच्चों के लिए ज्यादा आसान हों। हर उम्र के बच्चों की रुचि और कक्षा को ध्यान में रखते हुए ऐसा किया जा है। इधर देखिए ...।

रंजन : वाह... शानदार।

प्रो. दास : एआई के जरिए हमने किसी भी चैप्टर को ज्यादा आसानी से समझने योग्य बनाने की कोशिश की है। इसके लिए हमने किताबों के पाठ इस तरह से डिजाइन किये हैं कि उन्हें समझना ज्यादा आसान हो जाए। फ्लैशकार्ड और कई टेस्ट को भी हमने इसमें शामिल किया है।

रंजन : (हल्की हंसी के साथ) वाह...।इससे तो पढ़ाई की बोरियत खत्म हो गई।

प्रो. दास : हां...। इससे भी ज्यादा बड़ी बात ये है कि अब बच्चे अपनी सहज गति से सीख पा रहे हैं। एआई की मदद से छात्रों की क्षमताओं का आकलन किया जाता है और फिर उसी के मुताबिक पढ़ने की सामग्री तैयार की जाती है। आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस से ही यह तय किया जाता है कि पढ़ाने की कौन सी तरकीब ज्यादा कारगर होगी।पढ़ाई के बाद करियर के चुनाव में भी एआई की काफी अहमियत है।

रंजन : वाह...। ये तो बहुत शानदार बात है।

प्रो. दास : नेटेक्स लर्निंग (Netex Learning) एक ऐसा ही एआई इंटरफेस (AI Interface) है।शिक्षक इसके जरिए ऑनलाइन कार्यक्रमों, वीडियो और तस्वीरों की मदद लेकर पढ़ाई में बच्चों की और बेहतर मदद कर सकते हैं। एआई की मदद से टीचर ज्यादा प्रभावी (Lesson Plan) भी तैयार कर सकते हैं।

राधिका : इसका मतलब ये हुआ कि आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस ना सिर्फ बच्चों के लिए बल्कि टीचर्स के लिए भी फायदेमंद है।

प्रो. दास : आपने बिल्कुल सही कहा राधिका जी। एआई आधारित एप्स की मदद से पाठों को ज्यादा बेहतर तरीकों से समझाया जा सकता है। जिन बिंदुओं पर बच्चों को मुश्किलें आती हैं उन पर सटीक तरीके से काम करना संभव हो जाता है। पढ़ाई के दौरान बच्चों में विषय की कितनी समझ बन पाई है, इस बात का अंदाजा भी आसानी से लगाया जा सकता है। अभी हालांकि यह सब कुछ शुरुआती स्तर पर है...। लेकिन जब शिक्षक भी पूरी तरह से डिजिटल टीचर के अवतार में होंगे तो बच्चों को और ज्यादा फायदा मिलेगा।

रंजन : (हल्की हंसी के साथ) वाह ... एआई तो टेक्नोलॉजी का करामाती रूप है।

प्रो. दास : हां... तभी तो हम इसका बखूबी इस्तेमाल भी कर रहे हैं। और हां... आप लोग इस बात के लिए चिंतित ना हों कि आपका बेटा मोबाइल फोन पर ज्यादा वक्त तो नहीं गुजार रहा है। क्योंकि हम बच्चों को अलग से काफी एक्सपेरीमेंट्स और प्रोजेक्ट भी दे रहे हैं।

रंजन : नहीं ... नहीं..। अब हमें ऐसी कोई चिंता नहीं है। हमें यकीन है कि इस कॉलेज के सभी स्टूडेंट्स का भविष्य काफी बेहतर ही होगा। आपका बहुत-बहुत शुक्रिया।

प्रो. दास : (हल्की हंसी के साथ) मेरा नहीं बल्कि एआई का शुक्रिया कहिए आप।

रंजन : जी , बिल्कुल।

(सभी हंसते हैं)

(Closing Music)